छात्राध्यापकों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन (बिजनौर जनपद के सन्दर्भ में)

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
अध्यापक शिक्षा विभाग
वर्धमान कॉलेज, बिजनौर

नीलाक्षी रानी
शोधार्थिनी
वेक्टेश्वर विश्वविद्यालय
गजरौला (उ.प्र.)

1. प्रस्तावना

हाल ही के वर्षों में पर्यावरण के प्रति सभी देशों में जागरुकता बढ़ी है। सरकार स्वयं भी पर्यावरण संरक्षण के प्रति चिंतित है अतः सरकार द्वारा पर्यावरण के सम्बन्ध में काफी कड़े कानून बनाये गये हैं, आवश्यकता है उनका पालन सुनिश्चित करने की। पर्यावरण संरक्षण के लिए हमें भी प्रयास करने होंगे और अपने आस–पास के पर्यावरण को संतुलित, संरक्षित एवं स्वच्छ रखना होगा। जनसंख्या वृद्धि के प्रति भी यदि लोगों को सचेत न किया जाये तो हमारे सारे प्रयास निष्फल हो जायेंगे। अतः वक्त रहते पर्यावरण से संबन्धित समस्याओं के प्रति लोगों में जागरूकता पैदा करनी होगी अन्यथा हमें अपना अस्तित्व खोने में देर नहीं लगेगी और हमारा आधुनिक विकास, नवीनतम तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी ज्ञान, वैज्ञानिक प्रगति का परिणाम भयावह रूप धारण कर लेगा।

पिछले छः दशकों में पर्यावरणीय समस्याओं ने बहुत गम्भीर रूप धारण कर लिया है। यह समस्यायें किसी एक नगर, प्रदेश या देश की नहीं बल्कि समस्त विश्व की हैं। आज विश्व भर के वैज्ञानिक, बुद्धिजीवी, राजनेता एवं प्रबुद्ध नागरिक इन समस्याओं से जूझ रहे हैं और यह प्रयास कर रहे हैं, कि विश्व को किस प्रकार इन समस्याओं से मुक्ति दिलायी जाये।

परन्तु वर्तमान इस ''विष युग'' में सभी पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान अकेले न तो कोई सरकार कर सकती है और न ही कोई गैर–सरकारी स्वयंसेवी संस्था अथवा संगठन। इन पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए समाज के हर वर्ग के प्रत्येक व्यक्ति को ही आगे आना होगा। समाज के हर वर्ग के प्रत्येक व्यक्ति की इस दिशा में भागीदारी अति आवश्यक तथा अनिवार्य है तथा यह तभी सम्भव है जब प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरण से सम्बन्धित इन समस्याओं, पर्यावरण के महत्व, पर्यावरण प्रदूषण से हानियाँ, पर्यावरण की सुरक्षा के उपायों व विधियों से परिचित हो तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति सजग व संवेदनशील हो। पर्यावरण संरक्षण के प्रति सजगता व संवेदनशील प्रत्येक व्यक्ति में केवल **'पर्यावरण शिक्षा'** द्वारा ही विकसित की जा सकती है। प्रस्तुत शोध–पत्र जनपद बिजनौर के विभिन्न संस्थानों के बी.एड. छात्राध्यापकों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन है।

2. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का मापन करना।
2. छात्राध्यापकों की 25 वर्ष से अधिक आयु वर्ग एवं 25 वर्ष से कम आयु वर्ग की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति की तुलना करना।
3. छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति की तुलना करना।
4. विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्राध्यापकों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति की तुलना करना।

3. परिकल्पनाएं

1. छात्राध्यापकों के 25 वर्ष से अधिक आयु वर्ग एवं 25 वर्ष से कम आयु वर्ग की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्राध्यापकों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. शोध विधि

शोध का अध्ययन सर्वेक्षण विधि के आधार पर किया गया है।

5. उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में भोपाल सिंह द्वारा निर्मित पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है।

6. प्रतिदर्श

आकस्मिक प्रतिदर्श चयन विधि का प्रयोग करते हुए इस शोध कार्य के प्रतिदर्श हेतु बिजनौर जनपद की शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थाओं के 125 छात्राध्यापकों को लिया गया है जिसमें 25 वर्ष से कम आयु के 60 एवं 25 वर्ष से अधिक आयु के 65 तथा 76 छात्राध्यापक एवं 49 छात्राध्यापिकायें तथा विज्ञान वर्ग के 47 तथा कला वर्ग के 78 छात्राध्यापक प्रतिदर्श में शामिल हैं।

7. सांख्यिकी विवेचना

आँकड़ों के संग्रहण के बाद उनकी विवेचना की गयी। प्रस्तुत शोध में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी. टैस्ट के द्वारा परिणामों की व्याख्या की गयी।

8. परिणाम एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध में छात्राध्यापकों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया गया है। आयु, लिंग एवं विज्ञान व कला वर्ग से सम्बन्धित परिकल्पना का परीक्षण टी–मूल्यों के आधार पर किया गया है।

9. छात्राध्यापकों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का आयु पर प्रभाव

आयु के अनुसार विभक्त प्रतिदर्श में प्राप्तांकों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन व टी–मूल्य सारणी संख्या–1 में प्रदर्शित किये गये हैं–

तालिका 1 आयु वर्ग के अनुसार पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

आयु वर्ग	छात्राध्यापकों की संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
25 वर्ष से कम	60	15.32	10.63	0.47	सार्थक नहीं
25 वर्ष से अधिक	65	16.23	9.80		

तालिका संख्या–1 से पता चलता है कि छात्राध्यापकों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर आयु का कोई प्रभाव नहीं होता है। इसमें टी का मान 0.47 है जो कि 0.01 एवं 0.05 किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः परिकल्पना संख्या–1 ''छात्राध्यापकों के 25 वर्ष से अधिक आयु वर्ग एवं 25 वर्ष से कम आयु वर्ग की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' स्वीकृत की जाती है।

10. छात्राध्यापकों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर लिंग का प्रभाव

तालिका संख्या 2 लिंग के अनुसार पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

लिंग	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
स्त्री	49	15.50	11.41	0.24	किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं।
पुरुष	76	15.99	9.40		

तालिका संख्या–2 से ज्ञात होता है कि छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं दोनों की पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है। यहाँ पर टी का मान 0.24 प्राप्त हुआ है जो कि किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः परिकल्पना संख्या–2 ''छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' स्वीकृत की जाती है।

11. विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्राध्यापकों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का प्रभाव

इस शोध हेतु छात्राध्यापकों को उनके स्नातक के विषयों के आधार पर दो भागों में बाँटा गया है – विज्ञान वर्ग एवं कला वर्ग। इन दो भागों में विभक्त प्रतिदर्श का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मूल्य ज्ञान किये गये हैं जोकि तालिका संख्या–3 में प्रतिदर्श किये गये हैं–

तालिका संख्या 3 विज्ञान व कला वर्ग के अनुसार पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

वर्ग	संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
विज्ञान	47	13.92	11.03	3.0	.01 स्तर पर सार्थक
कला	78	12.12	7.43		

तालिका संख्या–3 से स्पष्ट है कि पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर वैषयिक भेद का प्रभाव पड़ता है। यहाँ पर टी का मूल्य 3.0 प्राप्त हुआ है जोकि 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः परिकल्पना संख्या–3 ''विज्ञान एंव कला वर्ग के छात्राध्यापकों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अस्वीकृत की जाती है।

12. प्रस्तुत भाोध के उपरान्त जो तथ्य निकलकर सामने आये, वह इस प्रकार हैं

1. आयु वर्ग के आधार (25 वर्ष से कम एवं 25 वर्ष से अधिक) पर छात्राध्यापकों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. लिंग के आधार पर (छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं) छात्राध्यापकों की पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्राध्यापकों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में (0.01 स्तर पर) सार्थक अन्तर है।

13. निश्कर्श

इस शोध के उपरान्त यह बात स्पष्ट होती है कि छात्राध्यापकों की संकाय बी.एड. के पूर्व के अनुभव उनकी पर्यावरण शिक्षा की अभिवृत्ति का मान पूर्णांक 50 प्रतिशत के बहुत नजदीक था। अतः विद्यालयों के पर्यावरण शिक्षकों, पुस्तकों एवं पाठ्यक्रम पर इसका अधिक दायित्व है। प्रभावी शिक्षा–विधि, उचित पाठ्यक्रम एवं रुचिपूर्ण तथा सरल पुस्तकों के प्रयोग से सकारात्मक प्रभाव प्राप्त होंगे। पर्यावरण शिक्षा के पाठ्यक्रम को भविष्य के लिए अधिक उपयोगी बनाने का प्रयास होना चाहिए। छात्राध्यापकों को यह जानकारी प्रदान करनी चाहिए कि एक शिक्षक के रुप में वे पर्यावरण शिक्षा के ज्ञान को कैसे उपयोग कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भार्गव, महेश, 2006:आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन, आगरा, हरप्रसाद भार्गव
2. चौरसिया, आर.ए., 2006:पर्यावरण शिक्षा के मूल तत्व, आगरा, साहित्य प्रकाशन
3. गोयल, एम.के., 2009:पर्यावरण शिक्षा, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर
4. कपिल, एच.के., 2007:अनुसंधान विधियाँ, आगरा, भार्गव प्रकाशन
5. कपिल, एच.के., 2006:सांख्यिकी के मूल तत्व, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर